सूरह — एक कहानी

सूरह अश-शु'अरा

शायर

पूरा सफ़र — सात रसूल, एक पैग़ाम —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 26 • 227 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

ल'अल्लक बाख़ि'उन्-नफ़्सक अल्ला यकूनू मुअ्मिनीन
3. शायद तुम अपने आप को इस ग़म में हलाक कर दोगे कि वो ईमान नहीं लाते।

क़ाल कल्ला; इन्न म'इय रब्बी स-यह्दीन
62. उसने कहा: हरगिज़ नहीं! बेशक मेरा रब मेरे साथ है; वो मुझे राह दिखाएगा।

व इज़ा मरिज़्तु फ़-हुव यश्फ़ीन
80. और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है।

यौम ला यन्फ़'उ मालुंव्-व ला बनून; इल्ला मन अतल्-लाह बि-क़ल्बिन सलीम
88-89. उस दिन न माल काम आएगा न औलाद, सिवाए उसके जो अल्लाह के पास सहीह दिल ले कर आए।

इन्नी लकुम रसूलुन अमीन; फ़त्तक़ुल्-लाह व अती'ऊन
107-108. बेशक मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ; तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

नज़ल बिहिर्-रूहुल्-अमीन। 'अला क़ल्बिक लि-तकून मिनल्-मुन्ज़िरीन
193-194. इसे रूह-उल-अमीन ले कर उतरा। तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम ख़बरदार करने वालों में से हो।

अपने आप को ग़म में हलाक मत करो

बेटा, ये सूरह एक ऐसी आयत से खुलती है जो इतनी नर्म है कि ये आपको नबी ﷺ के दिल के बारे में सब कुछ बता देती है:

'ल'अल्लक बाख़ि'उन्-नफ़्सक अल्ला यकूनू मुअ्मिनीन — शायद तुम अपने आप को इस ग़म में हलाक कर दोगे कि वो ईमान नहीं लाते।'

बेटा, '**बाख़ि'उन्-नफ़्सक**' एक शदीद मुहावरा है — अपने आप को तबाह करना, अपनी जान को पूरी तरह घिसा देना। अल्लाह एक ऐसे आदमी का बयान कर रहे हैं जो इतना ग़मज़दा था कि उसकी अपनी क़ौम हिदायत रद्द कर रही थी कि वो उसकी

सेहत खा रहा था।

इसके बारे में सोचिए, बेटा। उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया, उसका मुक़ाता किया, उसपर गंदगी फेंकी, उसे क़त्ल करने की साज़िश की — **और उसका ग़म अपने लिए न था। ये था कि वो आग में ख़त्म हो जाएँगे।**

और अल्लाह, गोया, उसे कहते हैं: इस पर अपने आप को तबाह मत करो। '**इन नशा नुनज़्ज़िल 'अलैहिम मिनस्-समा-इ आयतन फ़-ज़ल्लत अअ्नाक़ुहुम लहा ख़ाज़ि'ईन** — अगर हम चाहें, तो उन पर आसमान से एक निशानी उतार दें, और उनकी गर्दनें उसके आगे आजिज़ी से झुकी रह जाएँ।'

बेटा, मतलब: **मजबूरी का ईमान कभी मंसूबा न था।** अल्लाह हर गर्दन को झुकने पर मजबूर कर सकते हैं। उन्होंने लोगों को चुनने दिया — और इसी लिए हिदायत आप से भी ज़बरदस्ती नहीं करवाई जा सकती।

बेटा, और यहाँ दावत करने वाले हर शख़्स के लिए, या बच्चे को हिदायत देने की कोशिश करते हर वालिद के लिए तसल्ली है: **किसी की हिदायत के लिए तुम्हारा ग़म अल्लाह को महबूब है — मगर इसे तुम्हें तबाह नहीं करना चाहिए।** अपना काम करो, और नतीजा उन के सुपुर्द करो।

मूसा: मेरा रब मेरे साथ है

फिर सूरह सात अंबिया की कहानियाँ तरतीब-वार सुनाती है — और बेटा, ग़ौर कीजिए कैसे वही अंदाज़ दोहराया जाता है, क्योंकि यही दोहराव **ही** पैग़ाम है।

मूसा (अलैहि0) को फ़िरऔन के पास जाने का हुक्म दिया गया, और उन्होंने ईमानदार ए'तिराज़ उठाए: वो मुझे झुठलाएँगे, मेरा सीना तंग होता है, मेरी ज़ुबान रवाँ नहीं, और उस आदमी के क़त्ल के मामले में उनके पास मेरे ख़िलाफ़ मुक़दमा है। और अल्लाह ने हर एक का जवाब दिया: '**कल्ला फ़ज़्-हबा बि-आयातिना इन्ना म'अकुम मुस्तमि'ऊन — हरगिज़ नहीं!** दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ; **बेशक, हम तुम्हारे साथ सुन रहे हैं।**'

बेटा, 'इन्ना म'अकुम मुस्तमि'ऊन' — हम तुम्हारे साथ, **सुन** रहे हैं। सिर्फ़ देखते हुए

नहीं। गुफ़्तगू में मौजूद।

फ़िरऔन का जवाब एक ऐसे आदमी का ग़ुरूर है जो समझता है एहसान मिल्कियत पैदा करते हैं: '**अ लम नुरब्बिक फ़ीना वलीदा** — क्या हमने तुम्हें अपने बीच एक बच्चे के तौर पर **नहीं पाला**? **व लबिस्त फ़ीना मिन 'उमुरिक सिनीन** — और तुम हमारे बीच अपनी उम्र के बरसों रहे।'

बेटा, एक मक्कार का क्लासिक हथियार: **मैंने तुम्हारे लिए चीज़ें कीं, तो तुम मुझपर अपनी ख़ामोशी के क़र्ज़दार हो।**

और मूसा ने हक़ीक़त का इनकार किए बग़ैर, उसे नई शक्ल दे कर जवाब दिया: '**व तिल्क नि'अ्मतुन तमुन्नुहा 'अलय्य अन 'अब्बत्त बनी इस्राईल** — और क्या **ये** एक एहसान है जो तुम मुझपर जताते हो — **कि तूने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बनाया?**'

बेटा, शान-दार। तूने एक बच्चे को महल में पाला — हज़ारों बच्चों को क़त्ल करने और एक पूरी क़ौम को ग़ुलाम बनाने के बाद। **इसे सख़ावत के तौर पर पेश मत करो।**

और फिर वो मुकालमा जहाँ फ़िरऔन ने पूछा 'और जहानों का रब क्या है?' — और मूसा ने सादा जवाब दिया: आसमानों और ज़मीन और जो उन के दरमियान है उनका रब; तुम्हारा रब और तुम्हारे बाप-दादा का रब; मशरिक़ और मग़रिब का रब। फ़िरऔन ने उसे दीवाना कहा और क़ैद की धमकी दी। बेटा, **ये एक ऐसे आदमी की आख़िरी दलील है जिसके दलाइल ख़त्म हो चुके: धमकी।**

जादूगर जमा किए गए, और जब उन्होंने हक़ देखा तो सजदे में गिर पड़े: '**आमन्ना बि-रब्बिल्-'आलमीन, रब्बि मूसा व हारून** — हम जहानों के रब पर ईमान लाए, मूसा और हारून के रब पर।'

फ़िरऔन ने उनके हाथ-पाँव काटने और सूली देने की धमकी दी। और उनका जवाब, बेटा, ईमान के अज़ीम जुमलों में से एक है: '**ला ज़ैर इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून — कोई नुक़सान नहीं! बेशक, हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं।**'

बेटा, उस सुब्ह वो तनख़्वाह-दार जादूगर थे जो एक बोनस की तलाश में थे। दोपहर

तक वो मरने को तैयार थे। **यही वो है जो हक़ को साफ़ देखना एक दिल के साथ करता है — और ये एक ही घंटे में हो सकता है।**

और फिर समंदर। बनी इस्राईल रात को निकले, और फ़िरऔन अपने लश्करों के साथ उनके पीछे पड़ा। '**फ़-लम्मा तरा-अल्-जम्'आनि क़ाल अस्हाबु मूसा इन्ना ल-मुद्रकून** — और जब दोनों गिरोह ने **एक दूसरे को देखा**, मूसा के साथियों ने कहा: **हम ज़रूर जा पकड़े जाएँगे!**'

बेटा, इसका तसव्वुर कीजिए: आगे समंदर, पीछे लश्कर, कहीं जाने की जगह नहीं। हिसाब से, वो ख़त्म थे।

'**क़ाल कल्ला — उसने कहा: हरगिज़ नहीं! — इन्न म'इय रब्बी स-यह्दीन — बेशक, मेरा रब मेरे साथ है; वो मुझे राह दिखाएगा।**'

बेटा, इस जुमले को याद कर लीजिए। 'इन्न म'इय रब्बी स-यह्दीन।'

देखिए उसने क्या **नहीं** कहा। उसने ये नहीं कहा 'मेरे पास एक मंसूबा है'। उसने ये नहीं कहा 'समंदर फट जाएगा' — उसे अभी ये पता न था। उसने बस कहा: मेरा रब मेरे साथ है; वो मुझे राह दिखाएगा।

बेटा, **यही ईमान अपनी सब से ख़ालिस शक्ल में है — अल्लाह के बारे में यक़ीन बिना तरीक़े के यक़ीन के।** और ठीक अगली आयत: '**फ़-औहैना इला मूसा अनिज़्रिब बि-'असाकल्-बह** — तो हमने मूसा की तरफ़ वही की: अपनी **लाठी समंदर पर मार।**'

राह भरोसे के एलान के बाद ज़ाहिर हुई, उस से पहले नहीं। बेटा, ये जुमला अपने ख़ुद के बंद रास्तों में कहिए।

इब्राहीम: सहीह दिल

फिर सूरह इब्राहीम (अलैहि0) की तरफ़ मुड़ती है, जिन्होंने अपनी क़ौम से सादा सवाल पूछा: '**मा तअ्बुदून** — तुम क्या पूजते हो?' और उन्होंने कहा: बुत, और हम उनके लिए वक़्फ़ रहते हैं। उन्होंने पूछा: '**हल यस्म'ऊनकुम इज़ तद्'ऊन** — क्या **वो**

तुम्हें सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? औ यन्फ़'ऊनकुम औ यज़ुर्रून — या तुम्हें फ़ायदा या नुक़सान देते हैं?'

और उनका जवाब, बेटा, हर अंधे नक़्ल करने वाले का जवाब है: '**बल वजद्ना आबा-अना कज़ालिक यफ़्'अलून** — बल्कि, **हमने अपने बाप-दादा को ऐसा करते पाया।**'

और फिर इब्राहीम (अलैहि0) ने अपने रब का बयान किया, बेटा — और ये हिस्सा पूरे क़ुरआन में अल्लाह के सब से ख़ूबसूरत बयानों में से एक है। इसे धीरे पढ़िए:

'**अल्लज़ी ख़लक़नी फ़-हुव यह्दीन** — वो जिसने मुझे **बनाया**, और **वही** मुझे **राह दिखाता** है — **वल्-लज़ी हुव युत्'इमुनी व यस्क़ीन** — और वही जो मुझे **खिलाता और पिलाता** है — **व इज़ा मरिज़्तु फ़-हुव यश्फ़ीन** — **और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है** — **वल्-लज़ी युमीतुनी सुम्म युह्यीन** — और वो जो मुझे मौत देगा और फिर ज़िंदा करेगा — **वल्-लज़ी अत्म'उ अंय्यग़्फ़िर ली ख़तीअती यौमद्-दीन** — और वो जिस से मैं **उम्मीद** रखता हूँ कि वो बदले के दिन मेरा गुनाह माफ़ कर दे।'

बेटा, बीमारी वाली आयत पर रुकिए, क्योंकि उस में अदब निहायत ख़ूबसूरत है। उसने कहा: 'और जब मैं बीमार **होता** हूँ, **वो** मुझे शिफ़ा देता है।' उसने **बीमारी अपने आप की तरफ़ और शिफ़ा अल्लाह की तरफ़ मंसूब की।**

उसने ये नहीं कहा 'जब वो मुझे बीमार करता है'। बेटा, ये एक ऐसे बंदे का अदब है जो जानता है कि सारी भलाई अल्लाह से आती है, और कि मुश्किल हमारे अपने दरवाज़े से दाख़िल होती है। अपने रब के बारे में यूँ बात करना सीखिए।

और आख़िरी ग़ौर कीजिए: '**अत्म'उ**' — मैं **उम्मीद** रखता हूँ। इब्राहीम (अलैहि0) तक, अल्लाह के ख़लील, ने माफ़ी को एक उम्मीद के तौर पर कहा, एक हक़ के तौर पर नहीं।

और फिर उनकी दुआ, बेटा — जिसे अपना बना लीजिए: '**रब्बि हब ली हुक्मंव्-व अल्हिक़्नी बिस्-सालिहीन** — मेरे रब, मुझे हिकमत दे और **मुझे नेकों के साथ मिला दे** — **वज्'अल ली लिसान सिद्क़िन फ़िल्-आख़िरीन** — और मुझे बाद की

नस्लों में **सच्चा ज़िक्र** अता कर — **वज्'अल्नी मिंव्-वरसति जन्नतिन्-न'ईम** — और मुझे न'ईम के बाग़ के वारिसों में रख — **वग़्फ़िर लि-अबी इन्नहू काना मिनज़्-ज़ाल्लीन** — और मेरे बाप को बख़्श दे; बेशक, वो गुमराहों में से था — **व ला तुख़्ज़िनी यौम युब्'असून — और उस दिन मुझे रुसवा मत कर जब वो उठाए जाएँगे।**'

बेटा, 'व ला तुख़्ज़िनी' — मुझे ज़लील मत कर, मुझे बे-नक़ाब मत कर, उस दिन। ये दुआ कहिए। हम में से हर एक के पास ऐसी चीज़ें हैं जो हम ज़ाहिर नहीं करना चाहेंगे।

और फिर वो आयत, बेटा, जो उस वाहिद चीज़ का नाम लेती है जो मायने रखेगी:

'**यौम ला यन्फ़'उ मालुंव्-व ला बनून — उस दिन न माल फ़ायदा देगा न औलाद — इल्ला मन अतल्-लाह बि-क़ल्बिन सलीम — सिवाए उसके जो अल्लाह के पास सहीह दिल ले कर आए।**'

बेटा, जो कुछ एक शख़्स अपनी ज़िंदगी जमा करने में गुज़ारता है आधी आयत में नाम ले कर रद्द कर दिया गया: माल और औलाद — वो दो चीज़ें जिनके लिए लोग सब से ज़्यादा मेहनत करते हैं। **कोई भी काम न आएगा।**

और क्या काम आएगा? एक '**क़ल्बुन सलीम**' — एक **सहीह** दिल।

उलमा ने 'सलीम' की तशरीह यूँ की: शिर्क से सहीह और महफ़ूज़, मुनाफ़क़त से पाक, मोमिनीन के लिए नफ़रत और हसद से ख़ाली, अल्लाह के लिए अपनी नियत में पाक। ये लफ़्ज़ 'सलामह' के उसी अस्ल से है — सलामती, मुकम्मलपन — और ख़ुद 'इस्लाम' के।

बेटा, ग़ौर कीजिए कि **दिल** वो है जिसका जायज़ा लिया जाता है, CV नहीं। ये नहीं कि तुमने कितना किया — ये कि करते वक़्त तुम्हारा दिल किस हालत में था। एक शख़्स ग़ुरूर और रंजिशों से भरे दिल के अंदर अमल का एक अज़ीम रिकॉर्ड उठा सकता है, और कुछ ले कर न आए।

तो एक उम्र का काम, बेटा, सिर्फ़ अमल बढ़ाना नहीं — **ये बर्तन को साफ़ करना है।** उस शख़्स को माफ़ करो जिसे तुमने माफ़ नहीं किया। उस हसद को हटाओ जिसे

तुम पाल रहे हो। पाक करो कि तुम जो करते हो क्यों करते हो। यही वो सामान है जो जायज़े में पास होता है।

पाँच और रसूल, एक जुमला दोहराया

और अब, बेटा, सूरह एक हैरत-अंगेज़ चीज़ करती है। ये नूह, हूद, सालेह, लूत और शुऐब (अलैहिमुस्सलाम) की कहानियाँ एक के बाद एक सुनाती है — और हर एक में तक़रीबन वही अल्फ़ाज़ हैं:

'**इज़ क़ाल लहुम अख़ूहुम... अला तत्तक़ून** — जब उनके **भाई** ने उनसे कहा: **क्या तुम अल्लाह से नहीं डरोगे?** — **इन्नी लकुम रसूलुन अमीन** — **बेशक, मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ** — **फ़त्तक़ुल्-लाह व अती'ऊन** — **तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो** — **व मा अस्अलुकुम 'अलैहि मिन अज्र** — **और मैं तुमसे इसका कोई मुआवज़ा नहीं माँगता** — **इन अज्रिय इल्ला 'अला रब्बिल्-'आलमीन** — **मेरा अज्र तो सिर्फ़ जहानों के रब के ज़िम्मे है।**'

बेटा, पाँच अंबिया, मुख़्तलिफ़ सदियाँ, मुख़्तलिफ़ क़ौमें, मुख़्तलिफ़ ज़ुबानें — और वही पाँच जुमले।

और ग़ौर कीजिए हर एक उनका '**भाई** कहलाया — 'अख़ूहुम'। वो कोई चीज़ थोपने वाले अजनबी न थे; वो उनकी अपनी क़ौम में से थे, जो उन की उस तरह परवाह करते थे जैसे एक भाई करता है।

और ग़ौर कीजिए हर एक ने किस बात पर ज़ोर दिया: '**मैं कोई मुआवज़ा नहीं माँगता।**' बेटा, ये इस सूरह में इतनी बार दोहराया गया कि ये इत्तेफ़ाक़ नहीं हो सकता। ये अल्लाह की तरफ़ एक सच्चे दाई की निशानी है, और ये वो इम्तेहान है जो क़ुरआन आपको लोगों की क़ियादत का दावा करने वाले हर शख़्स के लिए देता है: **वो तुमसे क्या ले रहा है?**

और हर क़ौम का ए'तिराज़ भी मिलता-जुलता था। नूह (अलैहि0) की क़ौम ने ए'तिराज़ किया कि सिर्फ़ सब से **नीचे** तबक़े ने उनकी पैरवी की — और उन्होंने जवाब दिया: '**व मा 'इल्मी बिमा कानू यअ्मलून** — मुझे क्या इल्म कि वो क्या

करते थे? **इन हिसाबुहुम इल्ला 'अला रब्बी** — उनका हिसाब तो सिर्फ़ मेरे रब के ज़िम्मे है — **व मा अना बि-तारिदिल्-मुअ्मिनीन** — **और मैं मोमिनीन को धुत्कारने वाला नहीं।**'

बेटा, उसने अमीर लोग खींचने के लिए ग़रीब मोमिनीन को हटाने से इनकार कर दिया। **यही दावत में दियानतदारी है।**

हूद (अलैहि0) की क़ौम यादगारें और क़िले बना रही थी, और उसने पूछा: '**अ तब्नून बि-कुल्लि रीइन आयतन तअ्बसून** — क्या तुम हर ऊँची जगह पर **दिखावे** के लिए एक निशानी बनाते हो? **व तत्तख़िज़ून मसानि'अ ल'अल्लकुम तख़्लुदून** — और अपने लिए क़िले बनाते हो **गोया तुम हमेशा रहोगे? व इज़ा बतश्तुम बतश्तुम जब्बारीन** — और जब तुम वार करते हो, **ज़ालिमों** की तरह वार करते हो।'

बेटा, एक फ़ासिद तहज़ीब के तीन अलामात, तीन लाइन में नाम की गईं: **दिखावे के लिए बनाना, यूँ बनाना गोया मौत न आएगी, और बिना रहमत के ताक़त इस्तेमाल करना।**

सालेह (अलैहि0) ने समूद को ख़बरदार किया कि 'हद से बढ़ने वालों के हुक्म' की इताअत न करें, 'जो ज़मीन में फ़साद करते और इस्लाह नहीं करते'। लूत (अलैहि0) ने अपनी क़ौम की हद से तजावुज़ का सामना किया। और शुऐब (अलैहि0) — बेटा, उसकी ख़ास फ़िक्र ग़ौर कीजिए — **कारोबार** के बारे में बात की: '**औफ़ुल्-कैल व ला तकूनू मिनल्-मुख़्सिरीन** — **पूरा नापो और नुक़सान पहुँचाने वालों में से मत बनो** — **व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीम** — **और सीधी तराज़ू से तोलो** — **व ला तब्ख़सुन्-नास अश्या-अहुम** — **और लोगों को उनकी चीज़ें कम मत दो।**'

बेटा, एक नबी जो बुनियादी तौर पर ईमानदार वज़्न और नाप के बारे में भेजा गया। ये आपको बताता है कि ये दीन तिजारती दियानतदारी को कितनी संजीदगी से लेता है। **आपकी दुकान का काउंटर इबादत की जगह है या तबाही की।**

और हर कहानी के बाद, वही इख़्तिताम: '**इन्न फ़ी ज़ालिक ल-आयह** — बेशक, इस में एक **निशानी** है — **व मा काना अक्सरुहुम मुअ्मिनीन** — मगर उन में से ज़्यादा मोमिन न थे — **व इन्न रब्बक ल-हुवल्-'अज़ीज़ुर्-रहीम** — **और बेशक, तुम्हारा रब**

— वही ग़ालिब, रहीम है।'

बेटा, अल्लाह हर एक कहानी के बाद ये क़ाफ़िया क्यों दोहराते हैं? क्योंकि सूरह एक ऐसे नबी ﷺ से खुली जो अपनी क़ौम के इनकार पर ख़ुद को ग़म में मार रहे थे। और अल्लाह उन्हें दिखा रहे हैं, सात बार: **ये हमेशा से यही अंदाज़ रहा है। ज़्यादा तर ईमान न लाए। तुम नाकाम नहीं हो रहे — तुम वो रास्ता चल रहे हो जो हर रसूल चला।**

अमानतदार रूह, और शायर

फिर सूरह वही के सरचश्मे की तस्दीक़ करती है: '**व इन्नहू ल-तन्ज़ीलु रब्बिल्-'आलमीन** — और बेशक, ये जहानों के रब का नुज़ूल है — **नज़ल बिहिर्-रूहुल्-अमीन** — **इसे रूह-उल-अमीन (अमानतदार रूह) ले कर उतरा** — **'अला क़ल्बिक लि-तकून मिनल्-मुन्ज़िरीन** — **तुम्हारे दिल पर**, ताकि तुम ख़बरदार करने वालों में से हो — **बि-लिसानिन 'अरबिय्यिम्-मुबीन** — एक साफ़ अरबी ज़ुबान में।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: 'तुम्हारे **दिल** पर'। ये सिर्फ़ कानों में इमला न किया गया; ये उसके दिल में रखा गया।

'**व इन्नहू ल-फ़ी ज़ुबुरिल्-अव्वलीन** — और बेशक, ये पहले लोगों की किताबों में (मज़कूर) है — **अ व लम यकुल्-लहुम आयतन अंय्यअ्लमहू 'उलमा-उ बनी इस्राईल** — क्या उनके लिए ये एक निशानी नहीं कि बनी इस्राईल के **आलिम** इसे **पहचानते** हैं?'

और फिर, बेटा, अल्लाह उस इल्ज़ाम का जवाब देते हैं जो इस सूरह को उसका नाम देता है। उन्होंने नबी ﷺ को शायर कहा था — क्योंकि उनकी बात पुर-असर थी और लोगों को हिला देती थी।

'**व मा तनज़्ज़लत बिहिश्-शयातीन** — और शयातीन इसे ले कर नहीं उतरे — **व मा यम्बग़ी लहुम व मा यस्तती'ऊन** — न ये उनके लिए जायज़ है, न वो इसकी ताक़त रखते हैं।'

'**वश्-शु'अरा-उ यत्तबि'उहुमुल्-ग़ावून** — **और शायर — गुमराह लोग उनकी पैरवी**

करते हैं — अ लम तर अन्नहुम फ़ी कुल्लि वादिंय्यहीमून — क्या तुम नहीं देखते कि वो हर वादी में भटकते हैं — व अन्नहुम यक़ूलून मा ला यफ़्'अलून — और ये कि वो वो कहते हैं जो वो करते नहीं?'

बेटा, दो इल्ज़ाम देखिए। 'वो हर वादी में भटकते हैं' — वो जो भी मौसम या मौज़ू उन्हें हिलाए उसकी पैरवी करते हैं: आज एक आदमी की तारीफ़, कल उस पर हमला; आज नेकी का जश्न, कल बुराई की तरग़ीब। **कोई मुक़र्रर सिम्त नहीं।**

और 'वो वो कहते हैं जो करते नहीं' — **ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ और अस्ल ज़िंदगी के दरमियान खाई।**

बेटा, ये एक नबी का बिल्कुल उल्टा है, जिसकी पूरी सनद इस पर टिकी है कि वो वो कहता है जो वो **करता** है।

और फिर इस्तिसना, बेटा — और ये अहम है, क्योंकि इस्लाम ने शायरी की ख़ुद मज़म्मत नहीं की: **'इल्लल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति व ज़करुल्-लाह कसीरंव्-वन्तसरू मिम्-ब'अ्दि मा ज़ुलिमू — सिवाए उन के जो ईमान लाए और नेक अमल किए और अल्लाह को बहुत याद किया, और ज़ुल्म किए जाने के बाद अपना दिफ़ा' किया।'**

बेटा, नबी ﷺ के सहाबा में शायर थे — हस्सान इब्न साबित (रज़ि0) ने उनका शे'र में दिफ़ा' किया, और आपने ﷺ उसकी हिम्मत-अफ़ज़ाई की और उसके लिए दुआ की। तो **क़लम की मज़म्मत नहीं होती; जिस सिम्त वो इशारा करता है उसका फ़ैसला होता है।**

और ये हर दौर के हर फ़न पर लागू होता है, बेटा: लिखने वाला, बोलने वाला, बड़े सुनने वालों वाला। **क्या तुम हर वादी में भटकते हो उस चीज़ के पीछे जो चलती है — या तुम्हारी कोई मुक़र्रर सिम्त है? और क्या तुम उसे जीते हो जो तुम शाया करते हो?**

सूरह ज़ालिमों के लिए एक तंबीह, और एक आख़िरी लाइन पर ख़त्म होती है: **'व स-यअ्लमुल्-लज़ीन ज़लमू अय्य मुन्क़लबिंय्यन्क़लिबून — और जिन्होंने ज़ुल्म किया वो जान लेंगे कि वो किस ठिकाने की तरफ़ लौटाए जाएँगे।'**

इस सूरह से क्या सीखा

1. लोगों की हिदायत पर ग़म करो, मगर ख़ुद को उस पर तबाह मत करो — अल्लाह हर गर्दन झुका सकते थे और न चुना।

2. 'इन्न म'इय रब्बी स-यह्दीन' — अल्लाह के बारे में यक़ीन तरीक़े के यक़ीन का मोहताज नहीं; राह भरोसे के बाद ज़ाहिर हुई।

3. किसी को माज़ी के एहसान हथियार बना कर मौजूदा ग़लती पर तुम्हारी ख़ामोशी ख़रीदने मत दो।

4. अल्लाह के बारे में इब्राहीम (अलैहि0) के अदब से बात करो: 'जब मैं बीमार होता हूँ, वो मुझे शिफ़ा देता है।'

5. न माल न औलाद काम आएगी — सिर्फ़ एक सहीह दिल। बर्तन साफ़ करो, सिर्फ़ रिकॉर्ड नहीं।

6. किसी भी दाई को इस से परखो कि वो तुमसे क्या लेता है: हर रसूल ने कहा 'मैं कोई मुआवज़ा नहीं माँगता'।

7. हर वादी में मत भटको, और कभी वो मत कहो जो तुम करते नहीं — क़लम की सिम्त से उसका फ़ैसला होता है।

या अल्लाह, हमें एक क़ल्बुन सलीम अता कीजिए, उस दिन हमें रुसवा मत कीजिए, और हमें सिर्फ़ वो कहने दीजिए जो हम जीते हैं। आमीन।